द्वितीय भारतीय भाषा (Second Indian Language)

इस खंड में चार भाषाएँ सम्मिलित की गई हैं—संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, बांगला। इस खंड की भाषाओं को संस्कृत/हिन्दी द्वितीय/उर्दू द्वितीय/बांगला द्वितीय नाम से संबोधित किया गया है। इस खंड से भी किसी एक भाषा का चयन अनिवार्य होगा। परंतु खंड 1 में जिस भाषा का चयन मातृभाषा के रूप में किया गया है उस भाषा का इस खंड से चयन नहीं किया जा सकेगा। जिन छात्रों की मातृभाषा हिन्दी नहीं होगी उन्हें इस खंड से हिन्दी द्वितीय लेना अनिवार्य होगा। यह पत्र भी 100 अंकों का होगा और उत्तीर्णांक 30 अंक होंगे।

तत्काल हिन्दी एवं संस्कृत के पाठ्यक्रम इस खंड में सम्मिलित हैं। उर्दू (द्वितीय) एवं बांगला (द्वितीय) के लिए वर्ग VII एवं VIII के पाठ्यक्रम क्रमशः वर्ग IX एवं X में लागू होंगे।

2.1 संस्कृत

1. प्रस्तावना

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। विश्व का सर्वाधिक प्राचीन साहित्य ऋग्वेद भी संस्कृत भाषा में ही है। चारों वेद, वेदांग, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र जैसे गौरवशाली ग्रंथों की अविच्छिन्न, सुनियोजित शृंखला इसी भाषा में है। इस भाषा में गणित, रसायन, भौतिकी, चिकित्सा विज्ञान, संगीत एवं नृत्य विद्या जैसे वैज्ञानिक ज्ञानों के साथ-साथ साहित्य की विविध विधाओं—नाटक, गद्य-पद्य लेखन आदि के बीज देखे जा सकते हैं। भारत एवं अधिकांश यूरोपीय भाषाओं की जननी संस्कृत सृष्टि के आदि काल से ही अपने ज्ञान-विज्ञानमयी स्रोतों से मानव-सभ्यता को अनुप्राणित करती आ रही है।

आज का विश्व विकास के यान पर सवार होकर भी अशांति, अवसाद एवं आतंक के साये में जी रहा है। संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों में निहित पर्यावरण के संतुलन का पाठ, नैतिक शिक्षा, नारी-सम्मान की अवधारणा, सर्वधर्मसमन्वय की उन्नत भावना जैसे जीवनोपयोगी तत्त्व मानव को इनसे मुक्ति दिला सकते हैं। कई भाषाओं की जननी होने के कारण इस भाषा के अध्ययन से परवर्ती भाषाओं का कोष बढ़ता है तथा भाषागत एवं साहित्यगत संतुलन व संवर्द्धन भी हो सकता है। आज यज्ञों की वैज्ञानिकता प्रमाणित है। इन यज्ञों के शुद्ध एवं सम्यक् संचालन हेतु संस्कृत शिक्षण अनिवार्य है। इसी प्रकार योग, वास्तु, चिकित्सा जैसे अनेक विषयों को वैज्ञानिक और सबल बनाने के लिए भी संस्कृत शिक्षण अनिवार्य है।

जीवनदायिनी इस संस्कृत विद्या में भी जीविका की असीम संभावनाएँ हैं। आज तो पश्चिम के चतुर लोगों द्वारा इस विद्या के अनेक गूढ़ तत्त्व 'अपहृत' किए जा रहे हैं। वास्तुविद्या, योग, चिकित्सा के सूक्ष्म तत्त्व, पर्यावरण-संरक्षण, पशु-धन संरक्षण जैसी अनेक विद्याएँ जीविका की अपार संभावनाओं के द्वार खोल सकती हैं। ओषधि-निर्माण के क्षेत्र में भी संस्कृत भाषा में निबद्ध 'भाव प्रकाश' जैसी रचनाओं का अध्ययन रोजगार की नयी संभावनाओं के द्वारा खोलता है। यज्ञ, पूजन की प्रासंगिकता भी वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक—दोनों दृष्टियों से सिद्ध है। इसी प्रकार प्राचीन संस्कृत के चिकित्सा-ग्रंथों के आधार पर औषधीय पौधों की खेती कर आर्थिक सम्पन्नता एवं रोजगार पैदा किए जा सकते हैं। इस प्रकार इस भाषा के सांगोपांग अध्ययन से धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है।

संस्कृत की अपार शब्दनिधि विश्व में अनुपम उदाहरण है। संस्कृत के एक धातु से डेढ़ लाख शब्द व्युत्पन्न होते हैं जबकि कुछ प्रसिद्ध भाषाओं में भी इतने शब्द नहीं मिलते। इस भाषा की शब्द व्युत्पादन की वैज्ञानिक विधि द्वारा शब्द या पद के सूक्ष्मतम स्वरूप तक पहुँच सकते हैं। किसी भी भाषा के कौशल हेतु श्रवण, वाचन, लेखन एवं भाषण-दक्षता को विकसित करना आवश्यक है। प्राचीन मनीषियों ने इसी पक्ष को दृष्टिगत कर वेदांग साहित्य—शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द एवं ज्योतिष् का विधान किया है। बाद में आचार्य पाणिनी ने संस्कृत व्याकरण को एक संतुलित एवं पूर्ण कलेवर प्रदान कर इस भाषा को पूर्णतः वैज्ञानिक बना दिया। विश्व की भाषाओं में यह प्रथम प्रयास था। नए शोधों से यह बात भी प्रमाणित हो गयी है कि आधुनिकता की नींव मानी जाने

वाली 'कम्प्यूटर-प्रणाली' के लिए भी संस्कृत भाषा सर्वाधिक उपयुक्त है। संस्कृत के विभिन्न आयुर्वेद ग्रन्थों-चरक संहिता, सुश्रुत संहिता तथा उपनिषद् जैसे अनेकानेक संस्कृत ग्रंथों पर निरंतर जारी शोधों से इस भाषा की वैज्ञानिकता ही तो प्रमाणित होती है।

बिहार का अतीत संस्कृत के समृद्ध एवं सुनहले दिनों से पूर्ण रहा है। याज्ञवल्क्य, जनक जैसे आत्मद्रष्टा ज्ञानी, वराहमिहिर, आर्यभट्ट जैसे गणितज्ञ व खगोलविज्ञानी, भारती-मण्डन जैसे प्रगल्भ दार्शनिक, चाणक्य जैसे कूटनीतिज्ञ, पतञ्जलि जैसा वैयाकरण, विद्यापति जैसे कवि इस माटी में संस्कृत की सोंधी सुगंध बिखेरते नजर आते हैं।

इस भाषा के अध्ययन से वर्तमान चुनौतियों से लड़ने में मदद मिलती है। पर्यावरण संरक्षण, लिंग-भेद की निस्सारता, दलित चेतना को जाग्रत करने की प्रेरणा, कर्म के आधार पर समाज की संरचना तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' से शांति एवं सदभाव की प्रेरणा इस भाषा के अध्ययन से मिलती है।

2. उद्देश्य :	माध्यमिक IX–X
सामान्य :	• संस्कृत साहित्य के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचित उत्पन्न करना • संस्कृत साहित्य की प्राचीन प्रतिनिधि रचनाओं एवं उनके रचनाकारों से विद्यार्थियों का परिचय कराना • विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करना • संस्कृत वाक्य-रचना में उन्हें निपुण बनाना • सामाजिक बुराइयों के निवारण हेतु किशोरावस्था के छात्रों के लिए लघु नाटक, सम्वाद पर आधारित ज्ञान कराना • पर्यावरण एवं मानव मूल्यों के प्रति सजगता उत्पन्न करना • सामाजिक शांति के प्रति जागृति की भाव उत्पन्न करना
विशेष:	• अनुच्छेद-लेखन की क्षमता का विकास करना। • संस्कृत के गद्यांशों, पद्यों एवं नाट्यांशों के भावार्थ समझते हुए उनका सुस्पष्ट एवं शुद्ध पाठ करना • सहपाठियों तथा शिक्षकों से वार्तालाप करना • संस्कृत के पठित पद्यों तथा वाक्यों को सुनकर उन्हें शुद्ध वर्तनी में लिखने की क्षमता का विकास करना • पठित विषय पर सरल संस्कृत वाक्यों में अपना भाव अभिव्यक्त करना • किसी कहानी अथवा निबन्ध को पढ़कर उचित शीर्षक प्रस्तुत करना • औषधीय पौधों की पहचान एवं उनके उपयोग के साथ-साथ उनकी खेती को बढ़ावा देना • आर्युवेद का विकास करना • संस्कृत साहित्य के अन्तर्निहित इतिहास को उजागर करना

3. परीक्षा का ढाँचा

वर्ग IX

समय—तीन घंटे **पूर्णांक—100**

	आवंटित अंक	घंटियों का आवंटन
(क) अपठित अवबोधनम्	13	30
(ख) रचनात्मक	15	30
(ग) अनुप्रयुक्त व्याकरण एवं	25 + 7 = 32	50

अनुवाद		
(घ) पठित-अवबोधनम्	40	70

खण्ड 'क'—अपठित गद्यांश

1. 400–500 शब्दों का एक साहित्यिक गद्यांश— 13

इस गद्यांश के आधार पर प्रश्न पूछे जायेंगे। ये प्रश्न एक पद में उत्तर/एक पूर्ण वाक्य में उत्तर वाले हो सकते हैं। भाषिक प्रश्न यथा विशेष्य-विशेषण संबंध/कर्त्ता-क्रिया पहचान/विपर्यय-पर्याय शब्दों की पहचान/सर्वनाम प्रयोग/अव्यय पद की पहचान/विभक्ति की पहचान संबंधी प्रश्न दिये जा सकते हैं। गद्यांश के शीर्षक संबंधी प्रश्न भी हो सकते है।

खण्ड 'ख'—रचनात्मक कार्यक्रम **15**

1. पत्र लेखन— 8
2. चित्र वर्णन/अनुच्छेद लेखन— 7

खण्ड 'ग'—अनुप्रयुक्त व्याकरण व अनुवाद— **32**

1. शब्दरूप
2. धातुरूप
3. संधि/संयोग
4. उपसर्ग
5. प्रत्यय

} 25

6. **अनुवाद—मातृभाषा में संस्कृत में—** **7**

खण्ड 'घ'—पठित अवबोधनम— **40**

(i) गद्य— 15

(ii) पद्य— 15

(iii) नाटक— 10

1. दो में से किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थ ग्रहण संबंधी या 2 प्रश्न— 4
2. गद्य पाठों पर आधारित 4 में से 3 बोधात्मक प्रश्न— 3 + 3 + 3 = 9
3. गद्य पाठों के विचार/संदेश से संबंधित एक लघु उत्तरात्मक प्रश्न— 2
4. किसी पठित पद्य पर आधारित अर्थ ग्रहण संबंधी 2 प्रश्न— 4
5. पद्य पाठों पर आधारित बोधात्मक प्रश्न— 3 + 3 = 6
6. पद्य पाठों के संदेश से संबंधित— 3 + 2 = 5
7. नाटक पाठों पर आधारित 3 में 2 बोधात्मक प्रश्न— 3 + 3 = 6
8. नाटक पाठों के संदेश से संबंधित 2 प्रश्न— 2 + 2 = 4

पाठ्यपुस्तक—राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग IX की नयी संस्कृत पाठ्यपुस्तक

कक्षा X

	आवंटित अंक	घंटियों का आवंटन
(क) अपठित अवबोधनम्	13	30
(ख) रचनात्मक	15	30

(ग) अनुप्रयुक्त व्याकरण एवं अनुवाद	25 + 7 = 32	50
(घ) पठित-अवबोधनम्	40	70

खण्ड 'क'—अपठित गद्यांश

1. 400–600 शब्दों का एक संस्कृत गद्यांश— 13

उपर्युक्त गद्यांशों पर आधारित शीर्षक चुनाव/विषय वस्तु का बोध और भाषिक विशेषताओं यथा विशेष्य-विशेषण संबंध/कर्ता-क्रिया, पहचान/पर्याय शब्दों की पहचान/विभक्ति की पहचान आदि पर अतिलघु/लघु उत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे।

खण्ड 'ख'—रचनात्मक कार्यक्रम

1. पत्र-लेखन/आवेदन-लेखन— 8
2. चित्र-वर्णन/अनुच्छेद-लेखन— 7

खण्ड 'ग'—अनुप्रयुक्त व्याकरण व अनुवाद— **32**

1. शब्दरूप
2. धातुरूप
3. संधि/संयोग
4. उपसर्ग
5. प्रत्यय
6. समास
7. कारक एवं विभक्ति

} 25

8. **अनुवाद—मातृभाषा में संस्कृत में—** **7**

खण्ड 'घ'—पठित अवबोधनम

(i) गद्य— 15
(ii) पद्य— 15
(iii) नाटक— 10

1. दो में से किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थ ग्रहण संबंधी 2 प्रश्न— 4
2. गद्य पाठों पर आधारित 4 में से 3 बोधात्मक प्रश्न— 3 + 3 + 3 = 9
3. गद्य पाठों के विचार/संदेश से संबंधित एक लघु उत्तरात्मक प्रश्न— 2
4. किसी पठित पद्य पर आधारित अर्थ ग्रहण संबंधी 2 प्रश्न— 4
5. पद्य पाठों पर आधारित बोधात्मक प्रश्न— 3 + 3 = 6
6. पद्य पाठों के संदेश से संबंधित— 3 + 2 = 5
7. नाटक पाठों पर आधारित 3 में 2 बोधात्मक प्रश्न— 3 + 3 = 6
8. नाटक पाठों के संदेश से संबंधित 2 प्रश्न— 2 + 2 = 4

पाठ्यपुस्तक—राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग X की नयी संस्कृत पाठ्यपुस्तक

4. पाठ्यक्रम

कक्षा	स्तरान्त योग्यताएँ				भाषिक तत्त्व क्षमता/तार्किक तत्त्व क्षमता	पाठ आधारित व्याकरण
	श्रवण	वाचन	लेखन	भाषण		
IX	• संधियुक्त पदों को सुनकर अर्थ ग्रहण	• गद्यांशों एवं पद्यांशों का शुद्ध एवं	• संधियुक्त पदों को सुनकर लेखन कार्य।	• सामयिक घटनाओं पर शुद्ध-शुद्ध	• संधि का प्रौढ़ ज्ञान। • अजन्त शब्द	• पाठ में प्रयुक्त संधि के विभिन्न पदों की

	करना।	सुगमता पूर्वक वाचन। • पद्यों का भावपूर्ण वाचन।		5 वाक्य सुनाना।	रूपों का ज्ञान। • महत्त्वपूर्ण धातु रूपों का लट् तथा लृट् एवं भूतकालिक 'क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्ययों का ज्ञान। • समास का सामान्य ज्ञान। • कारक के प्रमुख सूत्रों का ज्ञान, कर्ता, कर्म, करण संज्ञा। • संख्यावाची शब्दों के साथ पूरण प्रत्ययों के प्रयोग का ज्ञान। • कृत् एवं तद्धित प्रत्यय का सामान्य ज्ञान।	पहचान करना। • पाठ में प्रयुक्त विभिन्न अजन्त शब्द रूपों की पहचान करना। • पाठ में प्रयुक्त क्रियापदों (लट्, लृट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्) की अलग-अलग पहचान करना (परस्मैपदी एवं आत्मनेपदी)। • पाठ में आये अव्ययीभाव एवं तत्पुरुष समासों की पहचान करना।

कक्षा	स्तरान्त योग्यताएँ				भाषिक तत्त्व क्षमता/तार्किक तत्त्व क्षमता	पाठ आधारित व्याकरण
	श्रवण	वाचन	लेखन	भाषण		
					• हिन्दी के सरल उद्धारणों का संस्कृत में अनुवाद। • कल्पना कौशल का विकास। • चित्र-आधारित संस्कृत प्रश्नोत्तर। • सामाजिक बुराइयों (विशेषकर किशोरावस्था से संबंधित) के निवारण का ज्ञान कराना।	• पाठ में आये कर्ता, कर्म, एवं करण के कारकीय सूत्र-युक्त पदों की पहचान करना। • पाठ में आए संख्यावाची पदों के साथ पूरण प्रत्ययों की पहचान। • पाठ में कृदन्त एवं तद्धितान्त का सामान्य ज्ञान।
X	• लघु समास--युक्त पदों को सुनकर अर्थग्रहण करना।	• समासयुक्त वाक्यों को शुद्ध-शुद्ध पढ़ना।	• समासयुक्त पदों एवं वाक्यों को सुनकर शुद्ध-शुद्ध लिखना।	• समासयुक्त पदों से युक्त संस्कृत में वाक्य बनाकर सुनाना।	• व्यंजन एवं विसर्ग संधि का ज्ञान। • वैज्ञानिक अभिरुचि एवं कल्पना-कौशल का विकास। • कारक-सूत्रों यथा सम्प्रदान, अपादान, सम्बंध, अधिकरण का ज्ञान। • समास का सामान्य ज्ञान • उपसर्ग एवं प्रत्ययों का सामान्य ज्ञान।	• पाठ में प्रयुक्त व्यंजन एवं विसर्ग सन्धियों की पहचान कर उनका सन्धि विच्छेद करना। • प्रयुक्त वाक्यों का परस्पर कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में परिवर्तन करना।

कक्षा	स्तरानुसार योग्यताएँ				पाठ्य सामग्री/क्रियाकलाप
	श्रवण	वाचन	लेखन	भाषण	
X	• संस्कृत-पाठों को सुनकर उनके आदर्शों का अभिनयपूर्वक आत्मसात्करण करना। • संस्कृत-नाटकों के संवादों को हाव-भाव सहित पढ़ना। • विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में संस्कृत के प्रयोग को समझना। • संस्कृत-श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना। • संस्कृत-गीतों को सस्वर गाना। • पाठ में आए प्रमुख छन्दों, रसों, अलंकारों को पहचानना। • संस्कृत-साहित्य के इतिहास की सामान्य जानकारी। • पाठ में आए सांस्कृतिक संदर्भों को समझना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख कवियों के नाम याद करना।	• नाटकीय संवादों को अभिनयपूर्वक बोलना। • संस्कृत-नाटकों में अभिनय करना। • संस्कृत-गीतों को सस्वर गाना। • श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना। • छन्दों के अनुसार पढ़ना। • संस्कृत-वाक्यों को शुद्ध लिखना। • संस्कृत में निबन्ध लिखना। • संस्कृत में पत्र लिखना। • संस्कृत में अनुवाद करना। • संस्कृत-साहित्य के इतिहास का वर्णन करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख कवियों के नाम याद करना।	• संस्कृत-नाटकों के संवादों को हाव-भाव सहित पढ़ना। • संस्कृत-गीतों को सस्वर गाना। • श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना। • छन्दों के अनुसार पढ़ना। • संस्कृत में निबन्ध लिखना। • संस्कृत में पत्र लिखना। • संस्कृत में अनुवाद करना। • संस्कृत-साहित्य के इतिहास का वर्णन करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख कवियों के नाम याद करना।	• पाठ में आए सांस्कृतिक संदर्भों को समझना। • संस्कृत में लिखे गए पत्रों को समझना। • संस्कृत-साहित्य के इतिहास का सामान्य ज्ञान। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख कवियों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख ग्रन्थों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख पात्रों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख स्थानों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख घटनाओं के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख विषयों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख रसों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख छन्दों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख अलंकारों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख गीतों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख नाटकों के नाम याद करना। • संस्कृत-साहित्य के प्रमुख कवियों के नाम याद करना।

5. शिक्षण-विधि एवं तकनीक

संस्कृत-शिक्षण को सुगम, रोचक एवं छात्र-केन्द्रित बनाने के लिए अध्यापक आवश्यकतानुसार प्रश्नोत्तर विधि, अभिनय-विधि को अपनाते हुए छात्रों के परिवेश एवं उनकी भागीदारी का संस्कृत शिक्षण में संयोजन कर सकते हैं।

पुनः स्मरणीय कि व्याकरण विधि का अधिकाधिक उपयोग कर विद्यार्थियों के विकास का प्रयास किया जाए। अध्यापकों द्वारा संस्कृत के प्रश्नों का सरल पाठ करते हुए छात्रों द्वारा अनुवादन कराया जाए।

संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों का मनोरंजनपूर्ण अभ्यास भी भाषा-कौशलों के विकास में उपयोगी हो सकता है। अध्यापक द्वारा प्रायोगिक व्याकरण का ज्ञान अभ्यास द्वारा कराया जाए।

अध्यापक, बच्चों को दो-चार गुटों में बाँटकर, पठित अंश के आधार पर वादविवाद करवा सकते हैं।

5.1 विद्यालय/कक्षा क्रियाकलाप एवं टी० एल० एम०

कोड्डापरक गतिविधियों का आयोजन
संस्कृत अनुरोध/श्रुतलेख
प्रार्थना में गुरु/ईश्वर वंदना विषयक कम-से-कम दो श्लोकों का प्रयोग
प्रत्येक कक्षा में प्रति माह श्लोकोच्चारण तथा श्लोक प्रतियोगिता का आयोजन,
शैक्षणिक, अन्तर्वर्ष वर्ग का समायोजन
प्रत्येक विद्यालय में श्रेष्ठीय महापुरुषों की जन्म या पुण्य-तिथियों पर संस्कृत में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन अथवा
विविध विषयों पर आधारित वादविवाद करवा सकते हैं
संस्कृत की रोचक कथाओं, नाटकों एवं अन्य समसामयिक संदर्भों पर निर्मित संस्कृत के कार्टून फिल्मों या कथानियों को दिखलाना
कैसेट, वीडियो, कम्प्यूटर गेम आदि

6. संभावित प्रायोजना कार्य (कक्षावार)

कक्षा IX

1. संस्कृत भाषा में नीति वाक्यों का वाचन एवं संकलन
2. सरि गतिलेखा का निर्माण
3. घड़ी का चित्र बनाकर समय-दिखाना (संस्कृत भाषा द्वारा)
4. संगणक यन्त्र के माध्यम से 50 अल्पज्ञ पदों का अर्थसहित लेखन तथा वाक्यनिर्माण।
5. पंचों लकारों में खेल, नी—धातुओं का रूप-ज्ञान
6. लता, नदी, गो—शब्दरूपों का वाचन एवं लेखन
7. 1 से 100 तक संस्कृत संख्यावाची शब्दों का नित्य वाचन हारा ज्ञान
8. सामान्य तत्रिउत तथा कृदन्त प्रत्ययों से निष्पन्न शब्दों का संकलन
9. वर्णों के उच्चारण-स्थानों को नित्य के माध्यम से प्रदर्शित करना
10. कर्ता, कर्म तथा करण—प्रत्येक कारकयुक्त 20-20 वाक्यों का निर्माण
11. पाठ्यपुस्तक में व्यवहृत शब्दों को अकारादि क्रम से सजाना।

वर्ग X

1. विभिन्न समस्त पदों का विग्रहपूर्वक संकलन
2. व्यंजन तथा विसर्गसंधि तालिका का निर्माण
3. सम्प्रदान, अपादान, सम्बंध, अधिकरण कारकों से प्रत्येक के माध्यम से 10–10 वाक्यों का निर्माण।
4. घड़ी का चित्र बनाकर समय प्रदर्शन (संस्कृत भाषा द्वारा)
5. 50 अव्ययपदों का अर्थसहित संकलन तथा उसके वाक्य निर्माण
6. पाठ्यपुस्तक में व्यवहृत शब्दों को अकारादि क्रम से सजाना

7. पाठ्यपुस्तक की रूपरेखा

कक्षा IX

2.2 हिन्दी (द्वितीय भाषा)

बिहार की विशेषता बहुभाषिक वैविध्य है। बिहार में मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका आदि बोलियाँ तो हैं ही, इनके साथ पर्याप्त संख्या में उर्दू और बांग्लाभाषी लोग भी यहाँ रहते हैं। उर्दू को तो यहाँ द्वितीय राजभाषा का दर्जा भी प्राप्त है। इनके अतिरिक्त अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं से सम्बद्ध लोग भी यहाँ रहते हैं। विविध भाषाभाषियों के सम्मिलन से बिहार में विविधतापूर्ण संस्कृति विकसित होती आयी है। यह विविधता बिहारी समाज की सांस्कृतिक जीवंतता का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। छोटी-बड़ी हर भाषा के साथ एक सांस्कृतिक अस्मिता और जातीय अथवा उपजातीय वैशिष्ट्य भी जुड़ा होता है। शिक्षा का उद्देश्य इस वैशिष्ट्य का विलोप अथवा समीकरण न होकर रक्षा और परिपोषण होना चाहिए। विविधता की सुरक्षा होनी चाहिए, और इस सुरक्षा की जवाबदेही विशेषकर शिक्षा पर ही है। किन्तु जैसे इस बहुभाषी वैविध्य के बावजूद बिहार में समाज, संस्कृति आदि की संरचना में अदृश्य एकता के तत्त्व भी हैं, जिनके बल पर बिहार की एक और अखंड पहचान बनती है। वैसे ही, स्वभावतः, इस एकता और अखंडता को बनाये रखने और बढ़ाते जाने की जिम्मेदारी भी शिक्षा पर ही है। इन दुहरी जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहते हुए हमें राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसके साहित्य का एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाना होगा जो इन दुहरी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा सके। ऐसे छात्र जिनकी मातृभाषा हिन्दी है और ऐसे छात्र जो प्रारंभिक शिक्षा हिन्दी से इतर अपनी मातृभाषाओं में ग्रहण करते हों और आगे चलकर उच्चतर वर्गों में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ते हों, इन दोनों तरह के हिन्दी छात्रों के पाठ्यक्रम में वस्तुतः कोई तात्विक अंतर नहीं होगा, क्योंकि बिहार जैसे हिन्दीभाषी प्रांत में हिन्दी अंततः सब की राष्ट्रभाषा है, और किसी के लिए वह परायी नहीं है। किन्तु मातृभाषा के रूप में हिन्दी से इतर भाषाएँ पढ़नेवाले उच्च वर्गों वाले छात्रों के हिन्दी पाठ्यक्रम में एक विशेष प्रकार की सावधानी पाठ-चयन, निर्धारण और अभ्यासार्थ प्रश्नों की परिकल्पना में अपेक्षित है। उदाहरणार्थ, द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ने वाले छात्रों के पाठ्यक्रम में सर्वप्रथम हिन्दी के राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप और विशेषताओं पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए। राज-काज, व्यापार-वाणिज्य और ज्ञान-विज्ञान की माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी का जो वर्तमान वैश्विक रूप है उसका बोध छात्रों को कदम-कदम पर होता रहे, इसके लिए अतिरिक्त सावधानी बरती जानी चाहिए। बिहार की बोलियों और बिहार से बाहर हिन्दी की बोलियों के साथ हिन्दी के भाषायी और रचनात्मक संबंधों की उत्तरोत्तर स्पष्ट समझ होती चले; उर्दू, बांग्ला, पंजाबी, मराठी, गुजराती, संस्कृत और अंग्रेजी के साथ हिन्दी के जीवंत विनिमयात्मक संबंधों की यथार्थ समझ छात्रों को होती चले, तथा उनके भीतर भाषायी सहअस्तित्व और सद्भाव के संस्कार दृढ़तर होते चलें, इसके लिए विशिष्ट पाठों और मनोवैज्ञानिक आधारोंवाले अभ्यासों की पर्याप्त योजना होनी चाहिए।

द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवालों के पाठ्यक्रम में हिन्दी के मानक और परिनिष्ठित स्वरूप का विशेष आग्रह होना चाहिए। ऐसा आग्रह जो छात्रों में अनावश्यक तनाव और कठिनाइयाँ उत्पन्न करने के बदले इस पर अधिक ध्यान रखे कि उच्चारण, लेखन तथा मुखर और मौन पठन में भी बोलियों के स्थानीय प्रभावों से छात्रों को मुक्ति मिले और वे हिन्दी के मानक उच्चारण, व्याकरण-बोध और शुद्ध लेखन की ओर सहजता से प्रवृत्त हो सकें। उनके लिए हिन्दी सीखना बोझ न बने। वह एक प्रीतिकर और दिलचस्प प्रसंग सिद्ध हो।

द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

- रोजमर्रा के जीवन में हिन्दी में समझने-बोलने के साथ-साथ लिखने की क्षमता का विकास करना
- औपचारिक विषयों और संदर्भों में बातचीत में भाग ले पाने की क्षमता का विकास करना
- हिन्दी के माध्यम से अपने अनुभव-संसार को लिखकर सहज अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम बनाना
- संचार के विभिन्न माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिन्दी के विभिन्न रूपों को समझने की योग्यता का विकास करना
- अपनी मातृभाषा और परिवेशगत भाषा को साथ रखकर हिंदी की विविध संरचनाओं की समझ बनाना
- संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के महत्त्व और अखिल भारतीय स्तर पर नियोजन की विशाल संभावनाओं के संदर्भ में हिन्दी ज्ञान की उपादेयता समझाना
- हिन्दी में रचनात्मक साहित्य के प्रति उनमें आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना
- लिखित और मौखिक रूप में ऐसे छात्रों को उनके अपने विचारों की अभिव्यक्ति में सक्षम बनाना
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं, यथा—राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग और भाषा के प्रति उनमें सकारात्मक और संवेदनशील दृष्टि का विकास करना
- हिन्दी की विविध प्रयुक्तियों और उनकी भाषा से उन्हें परिचित कराना
- भाषा की व्यापक और बहुभाषिक प्रकृति से उन्हें परिचित कराना

परीक्षा का ढाँचा

वर्ग IX (द्वितीय भाषा)

इस पूरे पत्र को पाँच खण्डों में विभक्त कर प्रत्येक खण्ड के लिए उनके सामने अंक निर्धारित है :

1.	अपठित गद्यांश	12 + 8 = 20
2.	रचना	15
3.	व्याकरण	15
4.	(क) पाठ्य पुस्तक	40
	(ख) पूरक पुस्तक	10

1. इसके अंतर्गत दो अपठित गद्यांश होंगे जिनमें प्रथम साहित्यिक होगा जिसमें (300–400) शब्द होंगे। शीर्षक-चयन, विषयवस्तु का बोध, भाषिक संरचना पर आधारित लघु-उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों की संख्या अधिकतम तीन होगी और प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

   4 + 4 + 4 = 12

   द्वितीय अपठित गद्यांश वर्णनात्मक होगा जिसकी शब्द-संख्या (250–300) होगी। इस अंश से भी शीर्षक-चयन, विषयवस्तु का बोध और भाषिक संरचना पर आधारित दो लघु-उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

   4 + 4 = 8

2. इस खण्ड में 2 प्रश्न पूछे जाएँगे।

   (क) में अनौपचारिक पत्र-लेखन का प्रश्न होगा, शब्द संख्या 100 होगी। इसके लिए 7 अंक निर्धारित होंगे। 7

   (ख) में किसी समसामयिक विषय पर संकेत बिंदुओं से युक्त अधिकतम 100 शब्दों में अनुच्छेद-लेखन का प्रश्न होगा जिसके लिए 8 अंक निर्धारित होंगे। अनुच्छेद लेखन के विकल्प में संक्षेपण का एक प्रश्न पूछा जा सकता है। 8

3. व्याकरणिक प्रकरणों पर आधारित व्याकरण के तीन प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित होंगे। इस तरह इस भाग के लिए कुल 15 अंक होंगे।

   5 + 5 + 5 = 15

व्याकरण के मुख्य बिंदु :

लिंग, वचन, काल, विविध क्रियाएँ, वाच्य, संधि, समास, पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, लोकोक्तियाँ और मुहावरे।

किन्तु ध्यान रखा जाएगा कि इन प्रकरणों के प्रश्न यथासंभव पाठाधारित हों।

4. पाठ्यपुस्तक से कुल 40 अंकों के प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों के प्रकार और प्रत्येक के लिए अंक-व्यवस्था निम्नवत् होगी :

   (i) दो पद्यावतरणों में से किसी एक पर अर्थग्रहण संबंधी तीन प्रश्न 3 + 3 + 3 = 9

   (ii) निर्धारित कविताओं में से विषयबोध पर आधारित तीन प्रश्न 3 + 4 + 4 = 11

   (iii) किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी तीन प्रश्न 3 + 3 + 3 = 9

   (iv) अभिस्तावित गद्य-पाठों से विषयबोध संबंधी तीन प्रश्न 3 + 4 + 4 = 11

5. पूरक पाठ्यपुस्तक—इससे दो प्रश्न पूछे जाएँगे, जो निम्नवत्त होंगे

   (i) एक निबंधात्मक प्रश्न पूछा जाएगा जिसके लिए 4 अंक निर्धारित होंगे 4

   (ii) पूरक पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो-दो अंकों के तीन लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनकी अंक व्यवस्था इस प्रकार होगी 2 + 2 + 2 = 6

पाठ्यपुस्तक—राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग VII की नयी हिन्दी पाठ्यपुस्तक

पूरक पाठ्यपुस्तक—राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग VII की नयी हिन्दी पूरक पाठ्यपुस्तक

वर्ग X

इस पूरे पत्र को पाँच खण्डों में विभक्त कर प्रत्येक खण्ड के लिए उनके सामने अंक निर्धारित है :

1.	अपठित गद्यांश (क) और (ख)	12 + 8 = 20
2.	रचना (क) और (ख)	15
3.	व्याकरण	15
4.	पाठ्यपुस्तक	40
5.	पूरक पुस्तक	10

1. इसके अंतर्गत दो अपठित गद्यांश होंगे जिनमें प्रथम साहित्यिक होगा जिसमें 300–400 शब्द होंगे। शीर्षक-चयन, विषयवस्तु का बोध, भाषिक संरचना पर आधारित लघु-उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों की संख्या अधिकतम तीन होगी और प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

   4 + 4 + 4 = 12

   द्वितीय अपठित गद्यांश वर्णनात्मक होगा जिसकी शब्द-संख्या (250–300) होगी। इस अंश से भी शीर्षक-चयन, विषयवस्तु का बोध और भाषिक संरचना पर आधारित दो लघु-उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

   4 + 4 = 8

2. इस खण्ड में 2 प्रश्न पूछे जाएँगे।

   (क) में अनौपचारिक पत्र-लेखन का प्रश्न होगा, शब्द संख्या 100 होगी। इसके लिए 7 अंक निर्धारित होंगे। 7

   (ख) में किसी समसामयिक विषय पर संकेत बिंदुओं से युक्त अधिकतम 100 शब्दों में अनुच्छेद-लेखन का प्रश्न होगा जिसके लिए 8 अंक निर्धारित होंगे। अनुच्छेद लेखन के विकल्प में संक्षेपण का एक प्रश्न पूछा जा सकता है। 8

3. व्याकरणिक प्रकरणों पर आधारित व्याकरण के तीन प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित होंगे। इस तरह इस भाग के लिए कुल 15 अंक होंगे। 5 + 5 + 5 = 15

व्याकरण के मुख्य बिंदु :

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, कारक, काल, संधि, समास, लोकोक्ति, मुहावरा, शब्द-शुद्धि, वाक्य-शुद्धि, कर्त्ता की 'ने' विभक्ति का प्रयोग, उपसर्ग, प्रत्यय, उपसर्ग-प्रत्यय में अंतर, संधि-समास में अंतर।

4. पाठ्यपुस्तक (क) से कुल 40 अंकों के प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों के प्रकार और प्रत्येक के लिए अंक-व्यवस्था निम्नवत् होगी :

   (i) दो पद्यावतरणों में से किसी एक पर अर्थग्रहण संबंधी तीन प्रश्न 3 × 2 = 6

   (ii) निर्धारित कविताओं में से विषयबोध पर आधारित चार में तीन प्रश्न 3 × 3 = 9

   (iii) निर्धारित कविताओं में से अंतरनिहित संदेश, दो लघुउत्तरीय प्रश्न 3 + 2 = 5

   (iv) किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी तीन प्रश्न 3 × 2 = 6

   (v) गद्य-पाठों पर आधारित चार में से तीन प्रश्न 3 × 3 = 9

   (vi) गद्य-पाठों पर आधारित संदेश/शिक्षा संबंधी दो प्रश्न 3 + 2 = 5

5. पूरक पाठ्यपुस्तक—इससे दो प्रश्न पूछे जाएँगे, जो निम्नवत् होंगे:

   (i) एक निबंधात्मक प्रश्न पूछा जाएगा जिसके लिए 4 अंक निर्धारित होंगे 4

   (ii) पूरक पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो-दो अंकों के तीन लघु-उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएँगे, 2 + 2 + 2 = 6

पाठ्यपुस्तक—राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग VIII की नयी हिन्दी पाठ्यपुस्तक

पूरक पाठ्यपुस्तक—राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग VIII की नयी हिन्दी पूरक पाठ्यपुस्तक

सतत व्यापक मूल्यांकन

वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहरण करना

वार्तालाप, वाद-विवाद, भाषण, कविता-पाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को जानना।

बोलना

1. भाषण, वाद-विवाद
2. गति, लय, आरोह-अवरोह सहित सस्वर कविता-वाचन
3. वार्तालाप और उसकी औपचारिकताएँ
4. कार्यक्रम-प्रस्तुति
5. कथा—कहानी अथवा घटना सुनाना
6. परिचय देना, परिचय प्राप्त करना
7. भावानुकूल संवाद-वाचन

वार्तालाप की दक्षताएँ

टिप्पणी : वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय होगा।

श्रवण (सुनना) का मूल्यांकन

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेंगे। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 200 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक को सुनते-सुनते परीक्षार्थी अलग कागज पर दिए हुए श्रवण-बोधन के अभ्यासों को हल कर सकेंगे। रिक्त शब्द-पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य/असत्य का चुनाव आदि विधाओं पर आधारित अभ्यास हो सकते हैं। प्रत्येक आधे अंक के 10 प्रश्न होंगे।

वाचन (बोलना) का परीक्षण

- चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णन (इस वर्णन की भाषा अनिवार्यतः वर्णनात्मक होगी)
- किसी चित्र विशेष को देखकर वर्णनात्मक प्रभावाभिव्यक्ति
- किसी विषय पर स्मरण के आधार पर बोलना
- कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना

टिप्पणी

1. परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जाए।
2. विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
3. निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव संसार के हों जैसे : कोई चुटकुला या हास्य-प्रसंग सुनाना, हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे गए सिनेमा की कहानी सुनाना आदि
4. जब परीक्षार्थी बोलना प्रारंभ कर दे तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

कौशलों के स्तर भेद निर्धारण की दृष्टि

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
• विद्यार्थी में परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता तो है, किन्तु आशय को ससंबंध रूप में नहीं समझ पाता।	• शिक्षार्थी में मात्र शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता तो है, किंतु वह उन्हें सुसम्बद्ध रूप में बोल नहीं पाता।
• लघु-लघु संबंद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	• परिचित संदर्भों में मात्र लघु-लघु संबंद्ध कथनों को सीमित शुद्धता के साथ प्रयोग करता है।
• परिचित या अपरिचित—दोनों प्रकार के संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्टतः समझने की योग्यता तो है किंतु भाषागत अशुद्धियाँ भी है, जो भावाभिव्यक्ति में अवरोध उपस्थित करती है।	• लघु की अपेक्षा दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता लक्षित होती है किंतु संप्रेषण या अभिव्यक्ति में अवरोधक कुछ अशुद्धियाँ भी पायी जाती है।

• दीर्घ कथनों की शृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझता है और निष्कर्ष निकाल सकता है।	• अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा-प्रवाह प्रस्तुत कर सकता है। कुछ अशुद्धियों के बावजूद सम्प्रेषण निर्बाध रहता है।
• उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता के साथ जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं की समझ है।	• नगण्य अशुद्धियों से युक्त प्रसंग और श्रोता—दोनों के अनुरूप भाषण-शैली का प्रमाण देता है।

शिक्षण-युक्तियाँ :

(क) अध्यापक की भूमिका उचित वातावरण के निर्माण की होगी, जिसमें विद्यार्थी बिना झिझक लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति उत्साहपूर्वक कर सकें।

(ख) मुहावरों का प्रयोग वाक्यों में कराया जाय।

(ग) गलत से सही की ओर पहुँचने का प्रयास हो।

(घ) वर्ग-कार्य छात्र-केन्द्रित हो।

(ङ) शारीरिक रूप से बाधाग्रस्त छात्रों के लिए उपयुक्त शिक्षण-सामग्री का उपयोग किया जाय।

(च) मध्यकालीन काव्यों के मर्मस्पर्शी भावों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के लिए ऑडियो-वीडियो कैसेट, फीचर फिल्मों आदि का निर्माण प्रदर्शन आदि कराया जाय।

अधिगम

- इन उच्च कक्षाओं तक पहुँचकर छात्र ज्ञान, समझ, सूचनाएँ और कौशल अथवा दक्षता के एक ऐसे सघन शिक्षण के दौर से गुजरेंगे और उनमें भाषा-साहित्य के माध्यम से समय, समाज और यथार्थ की एक ऐसी समझ विकसित होगी कि यह संभावना की जा सकेगी कि बच्चे मानसिक और बौद्धिक रूप से पर्याप्त वयस्क, सजग और जिम्मेदार हो सकेंगे।
- उनमें पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को लेकर एक जवाबदेही और गंभीरता का भाव आएगा और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की चेतना जगेगी। वे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, सीखना—इन तमाम स्तरों पर सजग होकर व्यक्ति के रूप में समाज की एक क्रियाशील एवं विवेकपूर्ण इकाई बन सकेंगे।
- इस चरण में बच्चों में सामाजिक, धार्मिक, लैंगिक और भाषायी सहअस्तित्व और सद्भाव की एक सक्रिय और प्रभावी समझ जगेगी जिससे समाज एवं सभ्यता-संस्कृति की सकारात्मक शक्तियाँ संगठित हो सकेंगी। इस रूप में इन वर्गों के बाद बच्चे सच्चे अर्थों में एक उज्ज्वल भविष्य के आवश्यक आधार बन सकेंगे। उनमें नकारात्मक शक्तियों का रचनात्मक प्रतिरोध और प्रतिकार कर सकने की क्षमता भी जगेगी। सघन विश्लेषण, तर्कक्षमता एवं स्वतंत्र अभिव्यक्ति में वे समर्थ हो सकेंगे।
- इन वर्गों के पाठ्यक्रमों की संकल्पना ऐसी है कि उसके द्वारा छात्रों में साहित्य की विविध विधाओं की तात्त्विक और संरचनात्मक समझ बन सकेगी तथा भाषा और साहित्य की परंपराओं और प्रवृत्तियों की उनकी ऐतिहासिक जानकारी भी बढ़ेगी।
- व्याकरण और रचना के अपेक्षाकृत गहरे और विस्तृत ज्ञान तथा संबद्ध अभ्यासों द्वारा भाषा-साहित्य पर उनका अधिकार बढ़ेगा।
- इस चरण में कविताओं के वाचन, प्रदत्त विषय पर भाषण और वक्तृता, लेखन के विविध रूपों के अभ्यास द्वारा सामर्थ्य की अभिवृद्धि, साहित्य के अतिरिक्त सह-शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा परिचर्चा, संगोष्ठी आदि के साथ विविध कलाओं और रचनात्मक कार्यों से संबंधित अभिरुचियाँ, कौशल आदि भी बढ़ेंगे। वे नैतिकता, सौंदर्यबोध, समन्वित विवेक और कर्म-कौशल के विश्वसनीय परिचायक और स्रोत बन सकेंगे।
- पाठों के संकलन में प्रकृति, जीवन-जगत और सभ्यता की समसामयिक वास्तविकताओं के वैविध्यपूर्ण प्रतिनिधित्व का ध्यान इसलिए रखा गया है कि छात्र इनसे न केवल परिचित हों, बल्कि इन सबसे खुद को जुड़ा हुआ भी देखें, समझें और अनुभव करें। इन सब के प्रति जिम्मेदारी एवं जवाबदेही के भाव भी उनमें जगें।

शिक्षकों से अपेक्षाएँ

- हिन्दी-शिक्षकों को हिन्दी-शिक्षण का दायित्व पूरे मन और राष्ट्रसेवा की भावना से स्वीकार करना चाहिए। उन्हें अपने छात्रों को संतानवत् समझते हुए पाठ-संबंधी उनकी हर कठिनाई को सहानुभूतिपूर्वक दूर करने के लिए सदा-सर्वदा तत्पर रहना चाहिए। हिन्दी के विषय शिक्षक का यह दायित्व है कि वह पूरे हिन्दी पाठ्यक्रम से परिचित हो ले, विविध आयामों से उसका गहन और विश्लेषणात्मक अध्ययन कर ले और अपने अध्यापन-क्रम में दिखलाने की चेष्ट करें कि पठ्यक्रम वैज्ञानिक तथा पाठ्यसामग्री सम्पादित, सरस, मनोरंजक तथा उपादेय है। सारांश यह है कि पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के प्रति छात्रों में रुचि जगाना और उस रुचि का संरक्षण करना उनका प्राथमिक दायित्व है। छात्रों की जिज्ञासाओं को शांत करते हुए उन्हें अगली जिज्ञासाओं को भी वर्ग में रखने के लिए उत्साहित करना चाहिए। हिन्दी शिक्षक को ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि उसके किसी भी आचरण से ऐसा न हो कि हिन्दी पढ़ने के प्रति छात्र हतोत्साहित हो जाएँ या हिन्दी पढ़ने के प्रति उनमें अरुचि उत्पन्न हो जाए। हिन्दी-शिक्षकों को चाहिए कि हिन्दी-पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त भी स्तरानुकूल अध्ययन योग्य साहित्यिक सामग्रियों से अपने छात्रों को परिचित रखें, उन्हें पढ़ने के लिए उत्साहित करें तथा सदा अपने साथ विविध संदर्भग्रंथों को रखें।

♣